RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-09
September-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

आधुनिकता के संदर्भ में राम कथा एवं कृष्ण कथा का वैश्विक परिपेक्ष्य नई शिक्षा नीति और हिंदी भाषा

डॉ. गीता सहाय

हिन्दी विभाग, गया कॉलेज, गया

ARTICLE DETAILS

Article History
Received: 05 August 2017
Accepted: 10 Sep 2017
Published Online: 15 Sep 2017

ABSTRACT

किसी देश की शिक्षा नीति, भाषा, साहित्य अंतरूसम्बंधित होने के साथ–साथ उस देश की सामाजिक – सांस्कृतिक अस्मिता के परिचायक होते हैं। आधुनिक भौतिकतावादी युग में हमारे भारतीय समाज में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव दृष्टिगोचर हुए हैं। आज हमारे देश की परिस्थिति, आवश्यकताएँ बदल गई है। जिसमें आवश्यकता ऐसे नेतृत्व की है जो राष्ट्र के नागरिकों व सम्पूर्ण मानव जाति का सही दिशा में मार्गदर्शन कर सके। आज हम अपने पुरातन आदर्शों, संस्कृति से भटकते जा रहे हैं। वस्तुतः आज हमारे सम्मुख छात्रों में असंतोष, अनुशासनहीनता, बेरोजगारी, निर्धनता, वर्ग संघर्ष आदि अनुत्तरित समस्याएँ दिन – पर–दिन बढ़ती जा रही हैं। आवश्यकता है कि हिन्दी भाषा को इतना सबल बनाने की जो भारत के सभी नागरिकों को एकता के एक सूत्र में बाँध सके। ऐसे साहित्य की जो लोगों का सही मार्गदर्शन कर सके और ऐसी नई शिक्षा नीति की जो आज के समय की माँग को पूरा कर सके। वसुधैव कुट्म्बकम की भावना मानव के मन में जागृत कर सके। आज आवश्यकता है श्री कृष्ण जैसे युग गुरु की और राम के आदर्शों को जीवन में अपनाने की जिससे मानव जाति का, सम्पूर्ण विश्व का कल्याण हो सकें। इसलिए नई शिक्षा नीति और हिंदी भाषा का आधुनिकता के संदर्भ में राम कथा एवं कृष्ण कथा का वैश्विक परिपेक्ष्य

किसी देश की शिक्षा नीति, भाषा, सहित्य उस देश की सामाजिक सांस्कृतिकआस्मिता के परिचायक होते है। आधुनिकता के संदर्भ में रामकथा एवं कृष्णकथा का चिंरजीवी लोकख्थान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में बहुत ही प्रेरणादायक तथाअतिश्य ऊर्जस्विता प्रदान करने वाला सिद्ध हुआ है। मानवीय जीवना देश कीप्रतिष्ठा की दृष्टि से अद्भूत महत्व का सिद्ध हुआ है।

रामकथा का व्यवस्थित आदि स्त्रोत महर्शि वाल्मीकि विरचित 'रामायण' ग्रन्थ है।रामायण–माहात्म्य में रामायण–कथा की चिरन्तनता के विशय में कहा गया है –

†ं + ६ : – ! ()
री (ट))
वा0 रा0 मा0 ६३6

वैदिक संस्कृति में रामकथा के पात्रों, स्थानों, घटनाओं आदि के बीजपरकभाव्द–सकेंत पाये जाते है ऐसी मान्यता अब दृढ़ होती जा रही है। योगर्वा श्ठ,आनन्द रामायण, अध्यात्म रामायण, विश्णु पुराण, स्कनन्द पुराण, प्रध्यपुराण, विष्णुधर्मात्तर पुराण, रूदयामलतंत्र, श्रीमद्भागवत आदि धर्म चेतना प्रधान ग्रन्थों मेंतथा महाकवि कालिदास कृत 'रधुवंश महाकाव्यम्', भवभूति कृत 'उत्तररामचरितम्',जयदेव कृत 'प्रसन्नराघव', भास कृत 'प्रतिमानाटकम्' आदि प्रमुख संस्कृतरचनाओं में रामकथा की यह अजस्र धारा पूरे वीश्टत्य के साथ प्रवाहमान रही है। भाषाओं में पालि भाषा के कई जातक ग्रन्थों में तथा प्राकृत व अपभ्रशं केनाट्य एवं चरित ग्रन्थों में रामकथा को रचयिताओं ने अपना वर्ण्य विषय बनाया।

भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के काव्य–विस्तार में भी रामकथा के प्रसंग बहुलता सेगृहीत मिलते है।

हिन्दी साहित्य के विकास के अन्तर्गत रामकथा के विकास की वैविध्यपूर्ण परम्परा दृष्टिगत होती है। इस सम्बन्ध में सबसे अधिक प्रभाव गाली एवं युगव्यापी भूमिका 'गोस्वामी तुलसीदास' और उनके कालजयी महाकाव्य 'श्री रामचरितमानस' की है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री रामचरितमानस के माध्यमसे रामकाव्य का जो लोक सुलभ कल्याणकारी मार्ग दिखाया वह भारत केसांस्कृतिक इतिहास की कालजयी अनूठी रचना है। हिन्दी काव्य के इतिहास मेंआधुनिक युग मे साहित्य जगत और दे काल की बदली हुई परिस्थितियों मेंकई तरह के उतार–चढ़ाव लक्षित दृ श्टिगत हुए इसके कारण राम काव्य कीसर्जना की दि गा भी बदली। भक्तिकालीन रामकाव्य में भक्तिचेतना, पारलाकिकचिन्तन तथा मोक्षकामना और भगवद् रणागति एवं आध्यात्मिक विचारों कीप्रधानता है जबकि आधुनिक युगीन रामकाव्य में मानवीय मूल्यों का, स्वातन्त्र्यचेतना का, राश्ट्र प्रेम का ,सामाजिक सांस्कृतिक चेतना के जीवनाद काप्राधान्य है। आधुनिक युग के रामकाब्यों में प्रतीकात्मकता और लाक्षणिकता परआधारित सोच बहुत सी कृतियों में देखने को मिलती है। सीता के हरण कोस्वतन्त्रता के हरण के प्रंसग में सोचना, राक्षती वक्तियों को लोकपीड़न कीभवमभूमि में अनुभव करना तथा वन्य क्षेत्र की परिस्थितियों को पर्यावरण चेतना केसंदर्भ में देखना इसके साक्ष्य है। एक लोक प्रसिद्ध आख्यान होने के कारणरामकाव्य का प्रवाह परम्परामुलक है, पर समय समय पर उसमें नवीनता कीझलक दिखाई देती रहती है यह उसकी गति भीलता है आज के राम जोपवित्रता सच्चाई आद ऋषि के प्रतीक है उनका संघर्श भ्रष्टाचार रूपी रावण सेहोता दृष्टिगोचर होता है इसलिए आज राम कथा किसी एक देश काल कीसीमाओं की कड़ियों को भेदकर कालजयी रूप में वौश्विक हो गई है। आज फिरसे उस राम की आव यकता है जो भ्रष्ठाचार रूपी उस रावण को मार सके।किसी चिरन्तन गाथा को यदि समय के प्रवाह में श्रेष्ठकोटि के सर्जक मिलतेजायैं तो वह गाथा उस व्यक्तित्व से भी बड़ी हो जाती है। इस तथ्य कोरेखांकित करते हुए फादर कामिल बुल्के ने लिखा है "राम की दिग्विजय जितनीबड़ी है रामकथा की दिग्विजय उससे भी

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

बड़ी है।" यह विशेषता आधुनिकता सेप्रेरित गति गीलता से आती है।

आधुनिकता के सन्दर्भ में वी वक परिपेक्ष्य मे रामकथा साहित्य के साथसाथ कृष्ण कथा साहित्य का भी अपना विशेष महत्व है। श्री कृष्ण भगवानविष्णु के 8 वें अवतार और हिन्दु धर्म के ईश्वर माने जाते है। श्री कृष्ण निष्काम कर्मयोगी, एक आद ऋषि दार्शनिक एवं दैवी सम्पदाओं से सुसज्ज महानपुरूष थे। उनका जन्म द्वापरयुग में हुआ था। उनको इस युग के सर्वश्रेष्ठ पुरूष युग पुरूष या युगावतार का स्थान दिया गया है। कृष्ण के समकालीन महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित 'श्रीमद्भागवत' और 'महाभारत'; में कृष्ण का चरित्र विस्तृतरूप से वर्णित हुआ है। महाभारत में श्री कृश्ण के मुख्यतया वेद वेदागविद्राजनीति विशारद, कल योद्धा एवं धर्मोपदेश्टा चार रूपों का उल्लेख है।भगवद्गीता में कृष्ण और अर्जुन संवाद है। यह ग्रन्थ आज भी अधिकांश विश्वमे लोकप्रिय है इस कृति से कृष्ण को जगतगुरू का सम्मान भी दिया जाता है।

हिन्दी साहित्य में कृष्ण कथा का अपना विशिष्ट महत्व है। केवलसंस्कृत साहित्य ही नहीं हिन्दी साहित्य भी कृ ष्ण कथा सम्बन्धी रचनाओं सेसमृद्ध होता रहा है। अपनी भक्ति भावना और जीवन दर्शन से उसने भारतीय जनमानस को प्रभावित किया है। कृष्ण काव्य की इस प्रभाव शीलता में पुराण वपौराणिक आख्यानों का प्रशस्यथ योगदान है। मध्यकालीन कृष्ण–काव्य पर तो बहुत से आलोचनात्मक ग्रन्थ, शोध, प्रबन्ध और समीक्षाएँ लिखी गई है। आधुनिकयुग में लोकरक्षक, मानवधर्म की स्थापना करने वाले कृष्ण के जीवन की घटनाओं को पाराम्परिक रूप से स्वीकार करने के साथ काव्य में उनका प्रतीकव व्यग्यों के रूपों में प्रयोग किया जाने लगा। आधुनिक कृष्ण अत्यन्त समृद्ध एवं बहुमुखी काव्य है। कृष्ण कथा सहित्य कालजयी रचना के रूप में आज सम्पूर्णमानवजाति को सच्चाई व धर्म के मार्ग पर अग्रसर करने के लिए युग गुरू की भॉति सामर्थ्यवान है।

सहित्य समाज का दर्पण होता है और उसकी अभिव्यक्ति भाषा केमाध्यम से होती है। भाषा विचारों के आदान प्रदान का माध्यम होती है।

भारतीय भाषाओ की परम्परा, इतिहास और विकास क्रम में हिन्दी काविशेष महत्व है। वर्तमान में हिन्दी भाषा न केवल भारत में, अपितु विदेश मेंभी करोड़ो लोगो की सम्पर्क भाषा बनी हुई है। दरअसल भाषा किसी देश केइतिहास का वह आईना होती है जिसमे भविष्य भी देखा जा सकता है। हिन्दी भारतवर्ष का स्वाभिमान है और हिन्दी के विकास तथा प्रचार प्रसार में वास्तविकरूप से भारत के भविश्य की झांकी देखी जा सकती है। आज हिन्दी का स्वरूप वैश्विक या ग्लोबल हो चला है वह अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पकड़ मजबूतकर रही है साथ ही वह अपने स्वरूप को निरन्तर सँवार भी रही है।

भारतीय संविधान के अनुसार 'देवनागरी लिपि' में लिखी गई हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। आज हिन्दी भारत के अलावा कई देशों में व्यवह्मत हो रही है। दुनिया के कई छोटे बड़े देशों मे प्रवासी भारतीयों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में हिन्दी भाषा की उपस्थिति अब प्रभावीमानी जा रही है। इस बड़े फलक पर चहुमुखी चुनौतियों के बीच से उभरकरअब भारतीय मूल के अनगिनत प्रवासी हिन्दी भाषा को सृजन और अभिव्यक्तिका माध्यम बना रहे हैं ।

वैश्वीकरण आधुनिक विश्व का वह स्तम्भ है जिस पर खड़े होकर दुनियाके हर समाज को देखा, समझा और महसूस किया जा सकता है वैश्वीकरण किसी व्यक्ति, समाज,राष्ट्र को उसकी भौगोलिक सीमाओं से परें हटाकर एक समान धरातल उपलब्ध करता है। वैश्वीकरण के प्रवाह में आज कोई भी भाशाऔर साहित्य अछूता नहीं रह गया है वह भी अपनी सरहदों की सीमाओं कोपारकर विश्वभर के पाठकों तक अपनी पहचान बना चुका है जिसमें दुनिया भरके प्रबुद्ध पाठक भी एक दूसरे जुड़ सके है और साहित्य का वै वक परिप्रेक्ष्य मेंमूल्यांकन सम्भव हो सका है।

हिन्दी भारतवर्श की प्रमुख भाशा है। भारत के लगभग सभी क्षेत्रों मे बसनेवाले लोगो की सम्पर्क भाषा हिन्दी है। हिन्दी के अतिरिक्त कोई और भाषा इस देश की सम्पर्क हो भी नही सकती है। हिन्दी के विकास और विस्तार कीकहानी बड़ी रोचक और उतार – चढाव से भरपूर है। मध्यकाल की भौरसेनीअपभ्रंश

से विकसित पाश्चिमी हिन्दी से निःसृत खड़ी बोली का विकास आधुनिक काल मेंहुआ। स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान हिन्दी ने देश को एकता के सूत्र में बांधनेका कार्य किया। भारत में स्वाधीनता आन्दोलन में पूरे देश को जोड़ने में हिन्दीका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वाधीनता की बलिवेदी पर न्योछावर होने की लौजो दे वासियों के भीतर जगाई गई, वह हिन्दी भाशा के माध्यम से ही जगाईगई थी। क्योंकि इस संग्राम में हर तबके, हर मजहब, हर भाषा और विभिन्नसंस्कृतियों के लोग थे, जिनके मध्यसंचार और व्यवहार का कार्य हिन्दी ही करतीथी। राजनैतिक स्वतंत्रता में ही नहीं संस्कृतिक अस्मिता की रक्षा में हिन्दी का विशेष महत्व है।

हिन्दी के विकास मे हिन्दी भाषी क्षेत्रों के विद्वानों नें हिन्दी को देश की प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हिन्दी के विकास क्षेत्र जितना हिन्दी भाषी क्षेत्रों के विद्वानों का रहा है। उससेकम अहिन्दी भाषी विद्वानों का नही रहा है। बहुत सारे अहिन्दी भाषी क्षेत्रों केविद्वानों नें न केवल हिन्दी को अपनाया वरन् उन्होने हिन्दी को राजभाषा औरराष्ट्रभाषा के रूप मे स्थापित भी करना चाहा और जगह घूम–घूमकर हिन्दी काबिगुल बजाया साथ ही विदेशों में भी जाकर हिन्दी की पुरजोर वकालत की और अतंरराष्ट्रीय परिदृश्य में हिन्दी का परचम लहराया। इस सम्बन्ध में राष्ट्रपितामहात्मा गौंधी का योगदान महत्वपूर्ण है। गुजराती भाषी महात्मा गाँधी ने कहाथा –''हिन्दी ही देश को एक सूत्र में बांध सकती है।'' गाँधी जी का माननाथा कि हर भारतवासी को हिन्दी सीखना चाहियें और उसका व्यवहार करना चाहिए। ठीक इसी तरह मराठी भाषी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने एकअवसर पर कहा था – "हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी ।"

स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, सुभाषचन्द्र, बोस केश्वचन्द्र सेन आदि अनेक अहिन्दी भाषी दिद्वानों ने हिन्दी भाषा का प्रबल समर्थन कियाऔर हिन्दी को भारतवर्श का भविष्य माना। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

'सत्यार्थ प्रकाश' जैसा क्रांतिकारी ग्रन्थ हिन्दी में रचकर हिन्दी को एक प्रतिष्ठा प्रदानकी। कवि राजनेता और भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिन्दी में भाषण देकर इसके अंतरराष्ट्रीय स्वरूप औरमहत्व में अत्यन्त वृद्धि की ।

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा में हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा घोषित किया तब से लेकर अब तक हिन्दी के स्वरूप में उत्तरोत्तरविकास और परिवर्तन हुआ है। आज हिन्दी का स्वरूप ग्लोबल हो चला है भाषाऔर व्याकरण में नित नये प्रयोग किये जा रहे है। साथ ही आज हिन्दी का महत्व बअन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ रहा है। आज हिन्दी भाषा का अध्ययन विश्व के अनेक देशों में हो रहा है। कहीं पर यह अपनी मातृ भूमि भारत से जुड़े रहने का भावात्मक माध्यम लगता है। तो कही इसका उदेश्य आधुनिकभारत के अंतर्मन को समझना है। विश्व में हिन्दी क्षण को बढ़ावा देने केलिए निजी संस्थाएँ धार्मिक और सामाजिक सस्थाओं के साथ–साथ सरकारी स्तर पर विद्यालय एवं विश्वविद्यालय द्वारा भी हिन्दी क्षण का बखूबी संचालनकिया जा रहा है। उच्च अध्ययन संस्थानों में भी अध्ययन–अध्यापन एंवअनुसन्धान की अच्छी व्यवस्था है। आज दुनिया के अधिकांश देशों के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन–पाठन और शिक्षा जारी है। निश्चित रूप से आज हिन्दी अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर किसी पहचान की मोहताज नहीं है वरनउसने विश्व परिदृश्य में एक नया मुकाम हासिल किया है। अमेरिका, आस्ट्रेलिया, कनाडा आदि देशों में हिन्दी को विश्व की आधुनिक भाषा के रू॰ में पढ़ाया जाता है।

निःसन्देह आज हिन्दी का फलक विस्तृत हुआ है भारत के साथ–साथ आज हिन्दी विश्व भाषा बनने को प्रयत्न शील है। आज हिन्दी में वह सामर्थ्य ह जो पूरे देश को एक सूत्र में पिरोकर रख सकती है। आज हिन्दी बाजार और व्यापार की प्रमुख भाषा बनकर उभरी है हिन्दी आज अन्तर्रराष्ट्रीय स्तर पर अपनेपैर जमाने मे कामयाब हुई है। हिन्दी के प्रचार – प्रसार और विकास में सभी भाषा–भाषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विश्वके फलक पर हिन्दी कोस्थपित करने के लिए जहाँ एक ओर अनेक साहित्यकारों, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं ने इसकी पृष्ठभूमि तैयार की है तो वहीं दूसरी तरफ हिन्दी फिल्मों, गीतों,विज्ञापनों, बाजार, कम्प्यूटर, इंटरनेट शिक्षा प्रणाली आदि ने इसे विस्तारण कियाहै।

प्रत्येक देश अपनी सामाजिक सांस्कृतिक अस्मिता को अभिव्यक्ति देनेऔर पनपाने के लिए और साथ ही समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी विशिष्ट शिक्षा प्रणाली विकसित करता है। 1968 की राष्ट्रीय नीति आजादी के बाद के इतिहास में एक अहम कदम थी। उसका उदेश्य राष्ट्र कीप्रगति को बढ़ाना तथा सामान्य नागारिकता व संस्कृति और राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ करना था। उसमें शिक्षा प्रणाली के सर्वागीण, पुनर्निर्माण तथा हर स्तर पर शिक्षा की गुणवता को ऊँचा उठाने पर जोर दिया गया था। 1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद देश मे शिक्षा का व्यापक प्रसारहुआ है। पूरे देश में शिक्षा की समान संरचना और लगभग सभी राज्यों द्वारा 10+2+3 की प्रणाली को मान लेना शायद 1968 की कक्षा नीति की सबसेबड़ी देन है।

समय की माँग के अनुसार अगस्त 1985 के अन्त में केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री कृष्णचन्द्र पन्त ने लोकसभा के पटल पर 'नयी कक्षा नीति' सम्बन्धी मसौदाएक राष्ट्रव्यापी बहस के लिए प्रस्तुत किया। इस प्रारूप पर बड़े पैमाने पर बहसएवं चर्चा के फलस्वरूप विभिन्न स्तरों पर विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किये गये। शिक्षा के क्षेत्र में यह एक क्रांतिकारी कदम माना गया । इसलिये नयी शिक्षा नीति को 'शिक्षा की चुनौती' के नाम से भी सम्बोधित किया गया। राष्ट्रीयशिक्षानीति 1986 के बाद इसका संशोधित रूप 1992 में आया। मौजूदाशिक्षा व्यवस्था में तेजी से बदलते आज के वैश्विक परिद्श्य के हिसाब से मूलभूत बदलाव की आवश्यकता है जिसे पूरा देश महसूस कर रहा है। क्योंकिवर्तमान शिक्षा नीति जो 1986 में लागू हुई थी और जिसे 1992 में संशोधितकिया गया था वो आज हमारे बच्चों को 24 वी सदी की चुनौतियों के लिए तैयारकर पाने मे लगातार असक्षम सिद्ध हो रही है।

नई शिक्षा नीति जिसे इसरो के सेवानिवृत अध्यक्ष डॉ0 कृष्णस्वामी कस्तूरिरंगन की अध्यक्षता मे ड्राफ्ट किया गया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली कीकमियो को शिद्दत से दूर करने की कोशिश करती दिखती है। नई शिक्षा नीति द्वारा जो कठिन लक्ष्य देश के सामने रखा गया है। उसे हासिल करने मेएक अभिभावक के रूप मे, एक शिक्षक रूप में, एक कार्यकर्ता के रूप में, शिक्षा विभाग के अधिकारी के रूप में, सरकार के रूप में या फिर इस देश केएक सामान्य नागरिक के रूप में ईमानदारी से अपना योगदान देना और हिन्दी भाषा को दिल से अपनाना आज के युग की महत्ती आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

ग्रंथ सूची

- शर्मा, डॉ० श्रीनिवास शर्मा (2000):हिन्दी साहित्य का इतिहास. दिल्ली :अशोक प्रकाशन. नवीन संस्करण. पृष्ठ 293.
- वर्मा, डॉ० रामचंद्र (1998):हिन्दी साहित्य युग एवं प्रवृत्तियों काविकास. दिल्ली:कला मंदिर. संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण. पृष्ठ 192.
- फादर डॉ० कामिल बुल्के : रामकथा और तुलसीदास. इलाहाबाद :हिन्दुस्तानी अकेडमी. संस्मरण 2008. पृष्ठ 13.
- गुप्त, परमलाल (1973):हिन्दी के आधुनिक रामकाव्य का अनुशीलन. इलाहाबाद :रचना प्रकाशन. प्रथम संस्करण. पृष्ठ 482.

वेब सामग्री

- https://www.india.gov.in
- https://hi.m.wikipedia.org
- https://egyankosh.ac.in
- https://shodhganga.ac.in
- https://www.ncert.nic.in

शब्दकोश

पाठक, पण्डित रामचंद्र (1995): भार्गव आदर्श हिन्दी शब्दकोश. वाराणसी :भार्गव बुक डिपो. संशोधित संस्करण. पृष्ठ 98.

© RRIJM 2015, All Rights Reserved